इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

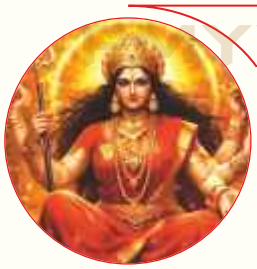

सिंह स्वरूप राज-राजेश्वरी शक्ति साधना

आषाढ़ी गुप्त नवरात्रि - 15 जुलाई से 23 जुलाई तक

यह पूर्ण **तांत्रोक्त साधना** है और **नवरात्रि** में किसी भी दिन सम्पन्न की जा सकती है। **ऐश्वर्यमयी, परमशक्ति स्वरूपा भगवती** के आश्रय में जब **साधक** प्रस्तुत हो जाता है, तो फिर वह **श्रीहीन, शक्तिहीन** रह ही नहीं सकता। **दुर्गा** का यह स्वरूप विशेष **प्रबल** तथा **ज्वलनशील दाहक** माना गया है, जो **साधक राज्य बाधा, शत्रु-बाधा, मुकदमे** इत्यादि से विशेष **दुःखी** हो, **चिन्ताओं** का भार बढ़ता ही जा रहा हो, तो यह साधना अवश्य करनी चाहिये। **देवी दुर्गा कल्याणी** स्वरूप है, जिनके तीव्र प्रभाव से **दुष्टात्माओं** का नाश हो जाता है और प्रबल से **प्रबल शत्रु** भी वश में होकर **दास स्वरूप** बन जाता है।

शिवोऽम् साधना

श्रावण मास - 20 जुलाई से 28 अगस्त तक

श्रावण मास भगवान भोलेनाथ शिव का मास है, जिसमें सही **पूजा साधना** करने से **भगवान शंकर** सारी **इच्छाओं** को पूर्ण करते हैं। यदि जीवन में **शिवत्व** प्राप्त करना है, तो **श्रावण मास** से अधिक कोई भी **सिद्ध मुहूर्त** नहीं है। व्यक्ति **भगवान शिव** की **अराधाना** कर अपने जीवन में सब कुछ प्राप्त कर लेता है, चाहे वह उसकी **धन सम्बन्धी समस्या** हो या **रोग मुक्ति, कालसर्प दोष निवृत्ति, कुटुम्ब सुख प्राप्ति** या फिर **पौरूषता** से सम्बन्धित हो। वहीं **संन्यासी** साधक **इष्ट की प्राप्ति, वाक सिद्धि** व **साधनाओं** में **श्रेष्ठता** प्राप्ति हेतु **भगवान शिव की साधना** को सम्पन्न करते हैं।

शालिग्राम विष्णु साधना

देवशयनी एकादशी - 25 जुलाई

जहां **भक्ति** तथा **शक्ति** दोनों का **संयोग** है, वहीं **आत्मसुख** और **क्रियाशीलता का आधार** है। इन दोनों का **संयोग** सुन्दर जीवन के निर्माण के लिये आवश्यक है, इसी लिये **साधनाओं** में जहां **शिव** की साधना होती है, वहीं **शक्ति की साधना** भी आवश्यक है, क्योंकि **शिव** और **शक्ति** का मिलना ही **पूर्णता की साधना** है, जहां **यज्ञ पुरुष** है वहीं **अग्नि** भी है, जहां **विष्णु** है वहीं **लक्ष्मी** भी हैं, और यही साधना के लिये भी आवश्यक है। जब **भक्ति** तथा **शक्ति,** दोनों का मिलन होता है, तभी **सिद्धि पूर्ण** रुप से प्राप्त हो पाती है।

दिव्य सिद्धि महामानव तांत्रोक्त गुरु साधना

गुरु पूर्णिमा - 29 जुलाई

गुरु साधना जीवन की **आधारभूत साधना** है। यह अपने आप में केवल एक **सिद्धि** नहीं, वरन स्वयं में **51 सिद्धियों** को **समाहित** किये हुये सम्पूर्ण **जीवन का प्रसाद** है। **गुरु तत्व** प्रत्येक साधक में **दिव्यौध, सिद्धौध** और **मानवौध** रूप में स्थित है जिसे साधना द्वारा **जाग्रत** कर **साधक** अपने जीवन को **भौतिक** और **आध्यात्मिक उन्नति** सहित सभी **श्रेष्ठताओं** से युक्त किया जा सकता है। **गुरु तत्व** की **चेतना** के फ़लस्वरूप ही **साधक** की **कुण्डलिनी** स्वतः ही जाग्रत होने लगती है। वास्तव में **गुरु तत्व** से ही **साधक** के जीवन की रचना हुई तथा इस **तत्व** के द्वारा ही सभी **श्रेष्ठताओं** को **आत्मसात** किया जा सकता है।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।